>

Title: Need to declare districts of Eastern Uttar Pradesh as drought affected.

श्री जगदम्बिका पाल (डुमरियागंज): अध्यक्ष जी, देश के मुखतलिफ राज्यों खासकर पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में जुलाई और अगस्त माह में मानसून की कमी के कारण जिस अवरसन से खरीफ की फसल के समक्ष सूखे का खतरा पैदा हो गया है, उसकी ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। स्वयं स्वीकार किया गया है कि बिहार में सामान्य औसत से अभी तक 42 प्रतिशत कम बारिश हुई है, जिसके कारण बिहार सरकार ने राज्य के 28 जनपदों को सूखाग्रस्त घोषित किया है। झारखंड में भी इसी प्रकार से 40 प्रतिशत बारिश कम हुई है। वहां भी 12 जनपद सूखाग्रस्त घोषित किए गए हैं। पूर्वी उत्तर प्रदेश में, जहां पिछले साल इसी महीने में 97 मि.मी. बारिश हुई थी, आज तक केवल तीन मि.मी. बारिश हुई है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के बस्ती, सिद्धार्थ नगर, कबीर नगर, गोरखपुर आदि जनपदों में पूरी खरीफ की फसल के समक्ष सूखा पैदा हो गया है। किसी तरह से वहां के किसानों ने अपनी पूंजी लगाकर धान की रोपाई की थी और ट्यूबवैल्स तथा नहरों से पानी लेकर उसे सींचा था। लेकिन अब नहरों का पानी भी सूख गया है। धान पीला पड़ गया है। लखनऊ, रायबरेली, सुल्तानपुर, इलाहाबाद, बनारस, कौशाम्बी, बस्ती आदि जनपदों में भी यही हालत है। जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, जैसा कि नेशनल डवलपमेंट कौंसिल की बैठक में प्रधान मंत्री जी ने स्वयं अपेक्षा की थी कि मानसून के अच्छा रहने से हमारे फूड इन्फलेशन में कमी आएगी और वह दहाई से इकाई में चला जाएगा। लेकिन जिस तरह की इस समय मानसून में कमी आई है, पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड में, वह चिंतनीय विषय है। बिहार के मुख्य मंत्री ने प्रधान मंत्री जी से मिलकर वहां केन्द्रीय अध्ययन दल भेजने की मांग की है। प्रधान मंत्री जी ने कृपापूर्वक आश्वासन भी दिया है। लेकिन पूर्वी उत्तर प्रदेश में न तो अभी किसी जिले को सूखाग्रस्त घोषित किया गया है और न वहां की मुख्य मंत्री जी ने कोई मांग की है। इस संघीय ढांच में जब तक मुख्य मंत्री मांग नहीं करेंगे, वहां कोई केन्द्रीय अध्ययन दल नहीं जाएगा। आखिर वहां के किसानों ने क्या गुनाह किया है कि जिनकी पूरी पूंजी इसमें लग गई है और उनके ट्यूबवैल्स भी चाहि मैकेनिकली, चाहे इलेक्ट्रिकल फाल्ट के कारण बंद पड़े हैं। मेरे स्वयं के जनपद में 300 सरकारी ट्यूबवैल्स हैं, जिनमें 50 प्रतिशत से ज्यादा खराब पड़े हैं। उनमें से 57 ट्यूबवैल्स जो इंडोडैक के हैं, वे खराब पड़े हैं।

अध्यक्ष महोदया: अब आप अपनी बात समाप्त करें।

श्री जगदम्बिका पाल : अध्यक्ष महोदया, यह कोई राजनीतिक विषय नहीं है। आज नहरों में भी पानी नहीं आ रहा है, टेल एंड तक पानी नहीं है। उसके बावजूद भी राज्य सरकार उदासीन है। किसानों के समक्ष जो संकट पैदा हो गया है। उन्हें बीज पर, खाद पर, पानी पर अनुदान नहीं मिलेगा, तो किसानों के समक्ष संकट पैदा होगा ही। मेरा निवेदन है कि पूर्वी उत्तर प्रदेश और अन्य जिलों को सूखाग्रस्त क्षेत्र घोषित किया जाए और वहां एक केन्द्रीय अध्ययन दल भेजा जाए।

राजकुमारी रत्ना सिंह (प्रतापगढ़): अध्यक्ष महोदया, मैं अपने को इस विषय से सम्बद्ध करती हूं।

अध्यक्ष महोदया: ठीक है, आप सदन के पटल पर अपना नाम भेज दें। श्री कमल किशोर कमांडो और राजकुमारी रत्ना सिंह जी अपने को इस विषय से सम्बद्ध करते हैं।

श्री प्रशांत कुमार मजूदमदार - उपस्थित नहीं।

श्री सुभाष वानखेडे।